पाठक/श्रोताओं का अकाल कैसे होगा खत्म

हकीकत यही है कि आज का साहित्यिक परिदृश्य बाहर से जितना चमकदार,आयोजनों से भरा और सक्रिय दिखता है,भीतर से उतना ही खोखला और पाठक-विहीन होता जा रहा है।आत्ममुग्धता के भंवर में फंसा साहित्यिक परिदृश्य जहाँ लेखक ही पाठक है और कवि ही श्रोता है क्योंकि पाठकों/श्रोताओं का मानों अकाल पड़ गया हो। आज का साहित्यिक परिदृश्य एक अजीब आत्मविरोध से गुजर रहा है।एक तरफ किताबों के प्रकाशन की बाढ़ आई हुई है,सोशल मीडिया पर रोज़ नई रचनाओं के पोस्टर चमक रहे हैं और लगभग हर सप्ताहांत कहीं न कहीं कोई काव्य गोष्ठी,सम्मान समारोह या साहित्यिक उत्सव सज रहा है।लेकिन इस समूचे कोलाहल के बीच जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं,तो एक सन्नाटा पसरा मिलता है-श्रोताओं और पाठकों का सन्नाटा।यह आज के दौर की सबसे बड़ी साहित्यिक त्रासदी है कि आज कवि ही कवि को सुन रहा है,लेखक ही लेखक की किताब को उपहार में लेकर पढ़ रहा है।आम पाठक इस पूरे परिदृश्य से गायब हो चुका है।कुछ अपवादों को छोड़कर और इस त्रासदी की ज़मीन किसी बाहरी ताकत ने नहीं,बल्कि खुद आज के रचनाकारों,उनकी कार्यप्रणाली और उनकी आत्ममुग्धता ने तैयार की है।जैसे कि गोष्ठियों का गिरोहबाज़ी तंत्र

साहित्य सेवा का पैमाना अब साधना नहीं,बल्कि नेटवर्किंग बन चुका है। अधिकांश काव्य गोष्ठियाँ और साहित्यिक मंच अब वैचारिक मंथन या कलात्मक विमर्श के केंद्र नहीं रहे,बल्कि वे पारस्परिक प्रशंसा संघ में तब्दील हो चुके हैं।तू मेरी तारीफ कर,मैं तेरी तारीफ करूँगा-आज के बहुसंख्यक साहित्यिक आयोजनों का यही अघोषित मूलमंत्र है।यहाँ तक यह सब भी मुँह देखकर होता है।इस गिरोहबाज़ी ने साहित्य के स्तर को भयानक नुकसान पहुँचाया है।जब मंच पर बैठा हर व्यक्ति एक-दूसरे को महान घोषित करने में जुटा हो,तो वहाँ आलोचना और आत्म-मंथन की गुंजाइश खत्म हो जाती है।जब खराब और सतही रचनाओं पर भी वाह-वाही की कृत्रिम बौछारें होती हैं,तो गंभीर पाठक का वहाँ से मोहभंग होना स्वाभाविक है।पाठक/श्रोता मूर्ख नहीं है।वह इस पाखंड को पहचानता है और खुद को इस तमाशे से दूर कर लेता है।मजे की बात यह है कि आजकल एकल काव्य पाठ से खुद बचते हैं क्योंकि दूसरे की कौन सुनना चाहता है।जहाँ ईर्ष्या प्राथमिक है।इस त्रासदी का एक और स्याह पहलू तब उजागर होता है,जब किसी एक कवि या शायर के एकल काव्य पाठ का आयोजन किया जाता है।ऐसे आयोजनों में अक्सर देखा गया है कि बिरादरी के दूसरे साथी लेखक या कवि शामिल ही नहीं होते।यह अनुपस्थिति केवल समय की कमी के कारण नहीं होती,बल्कि इसके पीछे एक गहरी ईर्ष्या और असुरक्षा की भावना काम कर रही होती है।मैं उसे सुनने क्यों जाऊँक्या वह मुझसे बड़ा हैयह संकीर्ण सोच आज के रचनाकारों में घर कर चुकी है।जब रचनाकार खुद अपने सहकर्मी के शब्दों का आदर नहीं कर सकता,तो वह किसी साधारण पाठक से यह उम्मीद कैसे कर सकता है कि वह अपना समय और पैसा खर्च करके उसे सुनने आएआज के दौर में एक और भ्रांति ने जन्म लिया है।जितना बड़ा ताम-झाम,उतना ही बड़ा साहित्यकार और ऐसे लोग बिना सोचे-समझे प्रेरणा की बात करने लग जाते हैं जबकि ऐसे लोग उस वक्त पैदा भी नहीं हुए थे मगर जलन कुछ भी लिखवा सकती है,कर-करवा सकती है।पाँच सितारा होटलों या बड़े सभागारों में होने वाले चमक-दमक से भरे आयोजन,बुके,मोमेंटो और शॉल ओढ़ाने की रस्मों को ही साहित्य की असली सेवा मान लिया गया है।लेकिन कड़वी हकीकत यह है कि कवि या शायर का कद उसके तामझाम,उसके सोशल मीडिया फॉलोअर्स या उसके द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रमों से तय नहीं होता।साहित्यकार को उसके शब्द जिंदा रखते हैं।उसकी कविता और उसकी शायरी की उम्र,उसकी सोच का विशाल दायरा इस बात पर निर्भर करती है कि वह मनुष्य की चेतना को कितना झकझोर पाती है।आज शब्द बौने हो गए हैं और उनके पीछे खड़ा स्व और उसका विज्ञापन बहुत विराट हो गया है।आजकल तो गंभीर विमर्शों से पलायन खुद साहित्य ही कर रहा है।स्त्री,दलित और पुरुष विमर्श अब दूर की कौड़ी हो गया है।साहित्य हमेशा से समाज का आईना और हाशिए की आवाज़ रहा है।चाहे वह स्त्री विमर्श हो,दलित विमर्श हो या बदलते सामाजिक ताने-बाने में पुरुष के भीतर का द्वंद्व पुरुष विमर्श हो-साहित्यिक विमर्शों ने हमेशा समाज को दिशा दी है।परंतु, आज की गोष्ठियाँ इन गंभीर और वैचारिक विमर्शों से पूरी तरह कट चुकी हैं।यकीन कुछ लोग हैं आज के दौर में भी जो ऐसा करते हैं पर अधिकतर नहीं है,सिर्फ काव्य-गोष्ठियों तक सीमित हैं।इन विषयों पर बात करना या तो जोखिम भरा मान लिया गया है या फिर उबाऊ। रचनाकार अब ऐसी रचनाएं लिखने और सुनाने में सुरक्षित महसूस करते हैं जो किसी को असहज न करें,जो सत्ता,समाज या रूढ़ियों से टकराने का जोखिम न लें।जब साहित्य अपने समय के सुलगते सवालों,अभिव्यक्ति की आज़ादी पर पहरे और सामाजिक विसंगतियों से आँखें चुराने लगे,तो वह केवल मनोरंजन की वस्तु बनकर रह जाता है।और मनोरंजन के लिए आज के पाठक के पास साहित्य से कहीं ज़्यादा सुलभ माध्यम मौजूद हैं।प्रकाशक-लेखक और पाठक की टूटती कड़ी

किताबें रोज़ छप रही हैं लेकिन उनका वितरण तंत्र ध्वस्त है।सेल्फ-पब्लिशिंग के दौर में कोई भी पैसे देकर अपनी किताब छपवा सकता है।प्रकाशकों को इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि किताब में साहित्यिक मूल्य क्या है।उनका व्यवसाय लेखक के पैसे से चल रहा है।नतीजा यह है कि बिना किसी संपादन और साहित्यिक कसौटी के कचरा सामग्री बाज़ार में बाढ़ की तरह आ रही है।इस भीड़ में जो सचमुच अच्छा लिख रहे हैं,उनकी किताबें भी खो जाती हैं।पाठक जब दो-चार बार खराब किताबें खरीदकर ठगा जाता है,तो वह किताबों से ही दूरी बना लेता है।

इस त्रासदी से बाहर निकलने का रास्ता भी कवियों,शायरों और लेखकों के आत्म-मंथन से ही शुरू होगा।यदि साहित्य को बचाना है,तो रचनाकारों को कमरों और गोष्ठियों से बाहर निकलना होगा।साहित्य को वापस चौपालों,आम लोगों और उनके सुख-दुख से जोड़ना होगा।सस्ती वाह-वाही का मोह छोड़ना होगा और अपनी आलोचना सुनने का साहस जुटाना होगा।आत्ममुग्धता के इस गुब्बार को फोड़ना होगा।शब्दों की शुचिता और गहराई वापस लानी होगी।यह समझना होगा कि मंच अस्थायी हैं,केवल शब्द शाश्वत हैं।

पाठक को केंद्र में रखना होगा।पाठक को केवल एक दर्शक या प्रशंसक समझने के बजाय उसे अपनी वैचारिक यात्रा का सहयात्री बनाना होगा।जब तक लेखक खुद केवल लिखने और सुनाने- की मशीन बना रहेगा और पढ़ने तथा सुनने की सहिष्णुता खो देगा,तब तक पाठकों का यह अकाल दूर नहीं हो सकता।समय आ गया है कि हम ताम-झाम की साख को छोड़कर शब्दों की साख की ओर लौटें।

कृष्ण कुमार निर्माण 9034875740

आषाढ़ महीने की नवरात्रि

आध्यात्मिक साधना और शक्ति आराधना का पर्व

आषाढ़ महीने की नवरात्रि, जिसे गुप्त नवरात्रि भी कहा जाता है, हिंदू धर्म में विशेष आध्यात्मिक महत्व रखती है। यह नवरात्रि आषाढ़ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक मनाई जाती है। इस दौरान मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा के साथ-साथ तंत्र, मंत्र और साधना का विशेष महत्व माना जाता है।

भारतीय संस्कृति में नवरात्रि का विशेष महत्व है। वर्ष में चार नवरात्रियां आती हैं, जिनमें दो चैत्र और शारदीय नवरात्रि सार्वजनिक रूप से मनाई जाती हैं, जबकि माघ और आषाढ़ की नवरात्रियों को गुप्त नवरात्रि कहा जाता है। आषाढ़ माह की गुप्त नवरात्रि साधना, आत्मशुद्धि और देवी शक्ति की उपासना का अत्यंत पावन अवसर है। यह पर्व विशेष रूप से उन साधकों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है जो आध्यात्मिक उन्नति, तांत्रिक साधना और देवी कृपा की प्राप्ति के इच्छुक होते हैं।

आषाढ़ नवरात्रि की शुरुआत शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होती है और नौ दिनों तक मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की विधिपूर्वक पूजा की जाती है। इन नौ दिनों में श्रद्धालु व्रत रखते हैं, दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं तथा देवी मंत्रों का जप कर अपने जीवन में सुख, शांति और समृद्धि की कामना करते हैं।

गुप्त नवरात्रि का महत्व सामान्य नवरात्रियों से कुछ भिन्न है। जहां चैत्र और शारदीय नवरात्रि में सार्वजनिक आयोजन, गरबा, दुर्गा पंडाल और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, वहीं आषाढ़ गुप्त नवरात्रि में पूजा और साधना अधिकतर व्यक्तिगत एवं गोपनीय रूप से की जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस अवधि में की गई साधना शीघ्र फलदायी होती है और साधक को मानसिक शक्ति, आत्मविश्वास तथा आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त होती है।

नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों-शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री-की पूजा की जाती है। प्रत्येक स्वरूप जीवन के किसी न किसी गुण, शक्ति और आध्यात्मिक संदेश का प्रतीक है। इनकी उपासना से मनुष्य के भीतर साहस, संयम, ज्ञान, करुणा और आत्मबल का विकास होता है।

आषाढ़ नवरात्रि में कलश स्थापना का विशेष महत्व है। प्रतिपदा के दिन शुभ मुहूर्त में कलश स्थापित कर अखंड दीप जलाया जाता है। भक्त प्रतिदिन देवी की आरती करते हैं, पुष्प अर्पित करते हैं और फलाहार या सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं। कई लोग नौ दिनों का कठोर उपवास रखते हैं, जबकि कुछ केवल प्रथम और अंतिम दिन व्रत करते हैं।

धार्मिक मान्यता है कि इस समय की गई देवी आराधना से नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है तथा जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं। विद्यार्थियों को विद्या, व्यापारियों को सफलता, गृहस्थों को सुख-समृद्धि और साधकों को आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त होने की मान्यता है। यही कारण है कि देश के अनेक शक्ति पीठों और देवी मंदिरों में इन दिनों विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया जाता है।

आषाढ़ नवरात्रि आत्मचिंतन का भी पर्व है। यह केवल बाहरी पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि अपने मन, विचार और व्यवहार को शुद्ध करने का संदेश देती है। क्रोध, अहंकार, लोभ और ईर्ष्या जैसी बुराइयों का त्याग कर प्रेम, सेवा, दया और सद्भाव का पालन करना ही देवी आराधना का वास्तविक उद्देश्य है।

वर्तमान समय में जब मनुष्य तनाव, प्रतिस्पर्धा और भौतिकता से घिरा हुआ है, तब आषाढ़ नवरात्रि हमें आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देती है। उपवास, ध्यान, जप और पूजा के माध्यम से व्यक्ति अपने मन को शांत करता है तथा सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव करता है। यह पर्व हमें प्रकृति, संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करता है।

आषाढ़ नवरात्रि का सामाजिक महत्व भी कम नहीं है। यह पर्व परिवार में धार्मिक वातावरण उत्पन्न करता है, लोगों में आस्था और नैतिक मूल्यों को मजबूत करता है तथा समाज में सहयोग, सेवा और सद्भाव की भावना को बढ़ावा देता है। इस दौरान दान-पुण्य, जरूरतमंदों की सहायता और कन्या पूजन जैसे कार्यों का भी विशेष महत्व माना जाता है।

अंततः कहा जा सकता है कि आषाढ़ महीने की नवरात्रि केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मशक्ति, आत्मसंयम और आध्यात्मिक जागरण का महान पर्व है। यह हमें सिखाती है कि सच्ची शक्ति बाहरी साधनों में नहीं, बल्कि हमारे भीतर निहित आत्मबल, श्रद्धा और सदाचार में है। यदि श्रद्धा, विश्वास और शुद्ध मन से मां दुर्गा की आराधना की जाए, तो जीवन में सकारात्मक परिवर्तन, मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है। यही आषाढ़ की गुप्त नवरात्रि का वास्तविक संदेश और महत्व है।

- सुनीता कुमारी
पूर्णियां बिहार

सहस्त्रधारा : प्रकृति की हजारों जलधाराओं में छिपा स्वर्गिक आनंद

प्रकृति ने भारत को अनेक ऐसे अनुपम उपहार दिए हैं, जहाँ पहुँचकर मनुष्य अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी को कुछ समय के लिए भूलकर शांति और आनंद का अनुभव करता है। हिमालय की गोद में बसा उत्तराखंड ऐसा ही एक प्रदेश है, जिसे अपनी प्राकृतिक सुंदरता, पर्वतीय वादियों, नदियों, झरनों और आध्यात्मिक वातावरण के कारण देवभूमि कहा जाता है। इसी देवभूमि की राजधानी देहरादून के निकट स्थित है एक अत्यंत मनोहारी पर्यटन स्थल — सहस्त्रधारा।

सहस्त्रधारा केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि प्रकृति और स्वास्थ्य का अद्भुत संगम है। यहाँ बहती हजारों जलधाराएँ, हरे-भरे पहाड़, शांत वातावरण और झरनों की मधुर ध्वनि पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। ÷सहस्त्रधारा÷ शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – सहस्त्र अर्थात हजार और धारा अर्थात जल की धाराएँ। पहाड़ियों से निकलती असंख्य जलधाराएँ जब चट्टानों से होकर नीचे गिरती हैं तो ऐसा दृश्य उत्पन्न होता है मानो प्रकृति स्वयं जल संगीत प्रस्तुत कर रही हो।

प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत संसार

देहरादून शहर से लगभग 14 किलोमीटर दूर स्थित सहस्त्रधारा चारों ओर से हरियाली और पहाड़ियों से घिरा हुआ है। वर्षा ऋतु में यहाँ का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। पहाड़ियों से गिरता निर्मल जल, हरे-भरे पेड़-पौधे और बादलों से ढका आसमान पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

यहाँ आने वाले पर्यटक झरनों के नीचे स्नान करने, प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने और यादगार तस्वीरें लेने का अवसर प्राप्त करते हैं। परिवार, मित्रों और प्रकृति प्रेमियों के लिए यह स्थान एक आदर्श पिकनिक स्थल है।

औषधीय गुणों वाला जल

सहस्त्रधारा की एक प्रमुख विशेषता यहाँ का गंधकयुक्त जल है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार इस जल में औषधीय गुण पाए जाते हैं। लंबे समय से लोग यहाँ स्नान करने के लिए आते रहे हैं और इसे त्वचा संबंधी समस्याओं के लिए लाभकारी मानते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी इस स्थान का विशेष महत्व है।

रोपवे से दिखाई देता मनोहारी दृश्य

सहस्त्रधारा का रोपवे पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। रोपवे की यात्रा के दौरान नीचे फैली हरियाली, पहाड़ी क्षेत्र और देहरादून घाटी का सुंदर दृश्य मन को रोमांचित कर देता है। ऊँचाई से दिखाई देने वाला प्राकृतिक नजारा पर्यटकों के लिए जीवनभर याद रहने वाला अनुभव बन जाता है।

कैसे पहुँचें सहस्त्रधारा

सहस्त्रधारा पहुँचना काफी आसान है।

रेल मार्ग से:-

निकटतम रेलवे स्टेशन देहरादून रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से सहस्त्रधारा लगभग 14 किलोमीटर दूर है। यहाँ से टैक्सी, ऑटो और स्थानीय परिवहन आसानी से उपलब्ध हैं।

वायु मार्ग से:-

निकटतम हवाई अड्डा देहरादून का जॉलीग्रांट एयरपोर्ट है, जो लगभग 35 किलोमीटर दूर स्थित है। एयरपोर्ट से टैक्सी द्वारा सहस्त्रधारा पहुँचा जा सकता है।

सड़क मार्ग से:-

दिल्ली, हरिद्वार, ऋषिकेश और मसूरी से देहरादून सड़क मार्ग द्वारा अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। देहरादून पहुँचने के बाद स्थानीय साधनों से सहस्त्रधारा पहुँचा जा सकता है।

कहाँ ठहरें

सहस्त्रधारा घूमने वाले पर्यटकों के लिए देहरादून शहर में ठहरने के अनेक विकल्प उपलब्ध हैं। यहाँ बजट होटल, गेस्ट हाउस, धर्मशालाएँ और आधुनिक सुविधाओं वाले रिसॉर्ट मिल जाते हैं।

सामान्य यात्रियों के लिए 800 से 1500 रुपये प्रतिदिन तक के बजट होटल उपलब्ध हो सकते हैं, जबकि बेहतर सुविधाओं वाले होटल एवं रिसॉर्ट का खर्च अधिक हो सकता है। परिवार के साथ यात्रा करने वाले पर्यटक देहरादून शहर में ठहरकर आसपास के अन्य पर्यटन स्थलों का भी भ्रमण कर सकते हैं।

अनुमानित यात्रा खर्च

सामान्य बजट में एक व्यक्ति की एक दिन की यात्रा का खर्च लगभग 1000 से 3000 रुपये तक आ सकता है। इसमें स्थानीय यात्रा, भोजन, प्रवेश शुल्क, रोपवे और अन्य छोटे खर्च शामिल हैं। होटल में ठहरने पर खर्च यात्रा की अवधि और होटल की श्रेणी के अनुसार बढ़ सकता है।

आसपास के दर्शनीय स्थल

सहस्त्रधारा के साथ पर्यटक देहरादून के अन्य प्रसिद्ध स्थलों का भी आनंद ले सकते हैं। इनमें रॉबर्स केव, मालदेवता, वन अनुसंधान संस्थान, तपकेश्वर महादेव मंदिर और मसूरी जैसे आकर्षक स्थान शामिल हैं।

पर्यावरण संरक्षण हमारी जिम्मेदारी

प्राकृतिक स्थलों की सुंदरता बनाए रखना प्रत्येक पर्यटक का कर्तव्य है। बढ़ते प्लास्टिक कचरे और प्रदूषण के कारण अनेक प्राकृतिक स्थल प्रभावित हो रहे हैं। सहस्त्रधारा जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में हमें स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए, प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए और प्रकृति के प्रति जिम्मेदार व्यवहार करना चाहिए।

निष्कर्ष

सहस्त्रधारा वास्तव में प्रकृति का एक अनुपम उपहार है, जहाँ जल, जंगल और पहाड़ों का अद्भुत मेल देखने को मिलता है। यहाँ की शांत वादियाँ, झरनों की कलकल ध्वनि और प्राकृतिक वातावरण मन को नई ऊर्जा प्रदान करते हैं। जो भी व्यक्ति प्रकृति के करीब जाकर कुछ पल शांति और आनंद के बिताना चाहता है, उसके लिए सहस्त्रधारा एक यादगार पर्यटन अनुभव साबित हो सकता है।

— सत्य भूषण शर्मा
प्रवक्ता,
पत्रकार, लेखक,
कवि एवं यूट्यूबर
उदयपुर
(राजस्थान)

मालवा में बिखरेगी अध्यात्म की अनूठी छटा

श्रीपूज्य जिनचंद्र सूरिजी के सानिध्य में जावरा से उज्जैन तक सजेगा ध्यान साधना का महापर्व

तीन दिवसीय जावरा महोत्सव में सांस्कृतिक संध्या और डिजिटल शॉर्ट फ्ले होगा मुख्य आकर्षण

उज्जैन में 10 दिनों तक बिना मोबाइल के मौन साधना शिविर में जुटेंगे देशभर के साधक

उज्जैन जिला ब्यूरो प्रमुख। जवाहर डोसी पीयूष

मालवा की परम पुनीत पावन धरा पर इस वर्ष वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही अध्यात्म,तप और आत्म-कल्याण की एक नई अलख जगने जा रही है।सत्य साधना के प्रणेता,परम पूज्य गुरुदेव ज.गु.पू.वृ.भ. खरतर गच्छाधिपति जैनाचार्य 1008 श्री पूज्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी महाराज साहब का मालवा क्षेत्र में मंगल आगमन हो रहा है। पूज्य आचार्य श्री के इस पावन प्रवास को लेकर जावरा से लेकर उज्जैन तक के श्रद्धालुओं और जैन समाज में भारी उत्साह और हर्ष का वातावरण है।आगामी दिनों में मालवा के रहवासी करीब एक पखवाड़े (15 दिन) तक ध्यान,तप और साधना की त्रिवेणी में डुबकी लगाएंगे।

कार्यक्रम के मीडिया प्रभारी ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इस

आध्यात्मिक महोत्सव को दो मुख्य चरणों में विभाजित किया गया है जिसके अंतर्गत जावरा में 3 दिवसीय भव्य कार्यक्रम और उज्जैन में 10 दिवसीय अनुशासित मौन साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

पहला चरण- जावरा में तीन दिवसीय विशेष महोत्सव (27 से 29 जुलाई)

जावरा (जिला-रतलाम) के अंबिका रिसोर्ट में आयोजित होने वाले इस त्रिविध महोत्सव में देश के कोने-कोने से गुरुदेव के भक्त और अनुयायी शामिल होने पहुंच रहे हैं।

27 जुलाई (बाल सत्र)÷ नई पीढ़ी में संस्कारों और अध्यात्म का बीजारोपण करने के उद्देश्य से विशेष बाल सत्र का आयोजन किया जाएगा जिसमें लगभग 100 बाल साधक एक साथ बैठकर ध्यान की बारीकियों को सीखेंगे।

28 जुलाई (सांस्कृतिक एवं भजन संध्या)÷ यह दिन इतिहास और भक्ति के अनूठे संगम का गवाह बनेगा।देर शाम प्रख्यात गायक पिंटू स्वामी की भव्य भजन संध्या आयोजित होगी।इसी श्रृंखला में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं यति श्री यतनलाल जी महाराज के विराट व्यक्तित्व और देश व समाज के प्रति उनके योगदान पर आधारित एक डिजिटल लघु नाटिका (स्द्ध॥ह्ल ह्यद्बड्ड4) का विशेष प्रदर्शन किया जाएगा।

महिदपुर के अजय धाडीवाल,शैलेष चौपड़ा,बड़ावदा के शिरीष सकलेचा के अनुसार-

29 जुलाई (गुरु पूर्णिमा महोत्सव)÷ गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पूज्य गुरुदेव के मुखारविंद से विशेष प्रवचन गंगा बहेगी जिसमें गुरु-वंदन और आत्म-कल्याण के सूत्रों पर प्रकाश डाला जाएगा।

दूसरा चरण- उज्जैन में 10 दिवसीय अनुशासित मौन साधना शिविर (5 से 16 अगस्त)

उज्जैन-देवास रोड स्थित अंतराय रिसोर्ट में 10 दिवसीय सत्य ध्यान साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है।इस शिविर के नियम निम्नानुसार रखे गए हैं-

पूर्ण डिजिटल डिटॉक्स- शिविर में शामिल होने वाले 150 से 200 साधक बाहरी दुनिया से पूरी तरह विलग हो जाएंगे।पूरे 10 दिनों तक मोबाइल का उपयोग पूर्णतः वर्जित रहेगा।

नियमित दिनचर्या- साधक प्रतिदिन पूर्ण मौन रहकर सत्य ध्यान साधना का अभ्यास करेंगे।विभिन्न सदाचारों, अनुशासित नियमों और नियमित स्वाध्याय (आत्म-अध्ययन) के जरिए साधक अपनी आत्मिक ऊर्जा का संचय करेंगे।

आयोजकों का संदेश- आयोजन समिति के पदाधिकारियों का मानना है कि आधुनिकता और भागदौड़ भरी तनावपूर्ण जिंदगी के बीच मालवा में आयोजित हो रहा यह साधना पर्व किसी संजीवनी से कम नहीं है।इस एक पखवाड़े की साधना से साधक न सिर्फ मानसिक शांति का अनुभव करेंगे बल्कि ध्यान को अपने जीवन में आत्मसात कर अपने और अपने परिवार के जीवन को अधिक खुशहाल,ऊर्जावान और तनाव मुक्त बना सकेंगे।

मालवांचल में कई जगह पूर्व में भी लगे हैं ऐसे शिविर-

मालवांचल के सुदूरवर्ती क्षेत्र तक में ऐसे शिविर नागेश्वर उन्हेल,नलखेड़ा,उज्जैन,इंदौर, रतलाम,जावरा आदि स्थानों पर एकाधिक बार आयोजित किए जा चुके हैं जिनमें सम्मिलित होकर साधकों ने विशिष्ट अनुभूति का एहसास समर्पण भाव से करने में अपना पूरा योगदान दिया है।शिविरों में सम्मिलित हुए साधकों के अनुसार,इस शिविर की दिव्य अनुभूति इसमें सम्मिलित होकर ही अनुभूत (ग्रहण/प्राप्त)की जा सकती है।

सरकार क्या कर रही है?

प्रकृति परिवर्तनशील है। प्रकृति के अनुसार प्राकृतिक आपदायें आती है जिन पर किसी का वश नहीं है। गर्मी, सर्दी और बरसात के मुताबिक आपदायें आती हैं। अभी मानसूनी मौसम चल रहा है, कहीं बादल फटते हैं तो गांव के गांव तबाह हो जाते हैं। कहीं पहाड़ों के दरकने से भूस्खलन से रास्ते अवरूद्ध हो जाते हैं। अभी हाल ही में किश्तवाड़ में हुये भूस्खलन से कई मृत्यु को प्राप्त हुये हैं। मुंबई में पेड़ गिरने से एक की मौत हो गई। अरुणाचल में भी पहाड़ दरक गये। नदियां उफान पर है। कई पुल बह गये या फिर ढह गये। कितनी ही सड़कें क्षतिग्रस्त हो गई मानो गढों में सड़क है। माना कि प्राकृतिक आपदा है , किसी का कोई वश नहीं पर विरोधी होने के नाते विरोध का स्वर उठाना बनता है, पूछना पड़ता है कि सरकार क्या कर रही है?

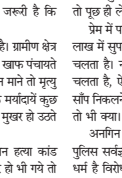

आजाद देश की आजाद नई पीढी, युवक हो या युवती। प्रेम करने का हक सब को बराबर का है। वे स्वतंत्र है अपनी मर्जी से अपना प्रेममय जीवन जीने को। प्रेम में कब बंधन होता है धर्म या जाति का। प्रेम में पागल तड़का लगाते हैं कि शादी करे या खेले खुल्ला खेल फरुखाबादी बिना शादी के। या फिर जीवन व्यतीत करे न्यायालय मान्यता प्राप्त द्ध॥ह्र-द्वठ्ठ में। मन मिला उतने दिन संग रहे अन्यथा राहें अलग करने में क्या वादा। परंतु लिव इन ले कभी कभी मामला लव जिहाद तक भी पंहुच जाता है। जो हो रहा होता है वो अपनी मनमर्जी से पर विपक्ष को टांग अड़ाना जरूरी है कि सरकार क्या कर रही है?

बात चली प्रेम की तो प्रेम अंधा होता है। ग्रामीण क्षेत्र में आज भी विजातीय विवाह मान्य नहीं है, खाफ पंचायते तुरंत सक्रिय हो जाती है। समझाने पर भी न माने तो मृत्यु दंड तक का प्रावधान है। चाहे लोकतांत्रिक मर्यादायें कुछ भी कहे पर इसकी आड़ में विरोध के स्वर मुखर हो उठते हैं कि सरकार क्या कर रही है?

प्रेम प्रसंग अतिरेक में आये तो केतन हत्या कांड पटल पर उभरते हैं। दो चार किस्से उजागर हो भी गये तो क्या नेपथ्य में न जाने कितने किस्से अंधेरों में विलुप्त हो जाते हैं। प्रेम अट्टष्ट रूप से उफनता है तो प्रति संग मंगेतर को पहाड़ी से धक्का लगा कर मौत के घाट उतार दिया। पुलिस सर्वज्ञ तो नहीं कि किसी के मन की बात जान ले पर विपक्ष को तो मौका मिल ही जाता है उद्घोष करने का कि सरकार क्या कर रही है?

आपकी यात्रा मंगलमय हो के उद्घोष के साथ हरिद्वार से बस रवाना हुई इंदौर के लिए। अभी आधे रास्ते ही पहुँचे थे कि दौसा के करीब बस टकरा गई एक ट्रक से और भयंकर आग लग गई। आठ दस जिंदा जल गये, अनेकों झुलस गये बस ड्राइवर की एक नींद की झपकी ने हादसा कर दिया। मगर विपक्ष को चर्चा का मुद्दा मिल गया और प्रलाप शुरू हो गया कि सरकार क्या कर रही है?

बिहार के एक कस्बे में एक ही परिवार के दो गुटों में जमीन विवाद में भिड़ंत हो गई। सिर फुटौवल हुआ, कई घायल हो गये मगर अंतर्यामी पुलिस कुछ नहीं कर सकी, और सरकार मूक दृष्टा रही पर क्या कर रही है?

आबकारी विभाग की कमाऊ बेटी मदिरा का प्रभाव कि झुंडुनू में मय की पिनक में अपनी ही माँ को चाकु से गोद कर मार डाला। अंतर्यामी पुलिस को कहाँ से पता चलता मगर विरोध के स्वर मुखरित होने लगे सरकार क्या कर रही है?

युरोप में भीषण गर्मी पड़ रही है। तापमान चालीस के पार है, जनता कलप रही है। जगह-जगह फव्वारे से पानी का छिड़काव हो रहा है। लोग बैचेन है। बात युरोप की है पर क्या हुआ, विपक्ष का बस चले तो पूछ ही ले कि सरकार क्या कर रही है?

प्रेम में पागल बेटी ने अपनी ही माँ को मारने की सात लाख में सुपारी दे दी। हत्या हो जाती है मगर पता बाद में चलता है। न पुलिस सूंघ पाती है, न समाज को पता चलता है, ऐसे में विपक्ष घटना पश्चात चीखती है जैसे साँप निकलने के पश्चात लाठी पीटने की तरह शोर मचाये तो भी क्या। कहते रहे सरकार क्या कर रही है?

अनगिन किस्से होते रहे हैं, हो रहे हैं और होते रहेंगे। पुलिस सर्वज्ञ नहीं, समाज अंतर्यामी नहीं पर विपक्ष का धर्म है विरोध करना, वक्त-बेवक्त माँग करते रहना कि सरकार क्या कर रही है?

छत्र छाजेड़ फक्कड़ बी 76 आनंद विहार
दिल्ली 110092 मो. 9350051179